हवा में एसपीएम लेवल बढ़ने पर बढ़ता है जोड़ों का दर्द

प्रदूषण बढ़ने के साथ ही गठिया रोगी कराहे

पवन कुमार

नई दिल्ली। राजधानी में प्रदूषण का स्तर लगातार बढ़ रहा है। इसका स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ रहा है। हवा में सस्पेंडेड पार्टिकुलेट मैटर (एसपीएम) की वजह से गठिया के मरीजों की दिक्कत लगातार बढ़ रही है। एसपीएम लेवल बढ़ने की वजह से रिम्योटॉयड ऑथराइटिस के मरीज भी बढ़ रहे हैं। एम्स के रिम्योटॉयड ऑथराइटिस डिवीजन की ओर से दिल्ली में 1000 मरीजों पर किए गए अध्ययन में यह तथ्य सामने आया है। एम्स को इस अध्ययन के लिए एसपीएम का डाटा भारतीय मौसम विभाग की ओर से उपलब्ध कराया गया।

एम्स के रिम्योटॉयड डिवीजन की ओर से राजधानी में 500 स्वस्थ और एम्स में इलाज के लिए आ रहे रिम्योटॉयड ऑथराइटिस के 500 500 मरीजों का तुलनात्क अध्ययन किया गया। भारतीय मौसम विभाग ने एम्स को वर्ष 2009-12 तक का एसपीएम का डाटा उपलब्ध कराया। अध्ययन में देखा गया कि दिल्ली की आबोहवा में नवंबर से लेकर जून तक एसपीएम 10 और 2.5 का लेवल ज्यादा था। इस अवधि में मरीजों की जांच करने और बीमारी का पुराना रिकॉर्ड देखने पर पता चला कि जब-जब आबोहवा में एसपीएम का लेवल बढ़ा तब-तब जोड़ों का दर्द भी बढ़ा। 500 स्वस्थ लोगों का भी लगातार अध्ययन किया गया। उनके खून के नमूनों की जांच की गई तो पता लगा कि इस अवधि में एंटीबॉडीज सेल्स विकसित होते हैं। अध्ययन में इस बात को भी शामिल किया गया है कि आबोहवा में सल्फर डाईऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड की मौजूदगी का कितना असर पड़ रहा है। अध्ययन की प्राथमिक रिपोर्ट में यह स्पष्ट है कि इन दोनों तत्वों की मौजूदगी से भी स्वास्थ्य पर गंभीर प्रभाव पड़ता है।

हवा में एसपीएम का स्तर बढ़ने से गठिया के मरीजों की परेशानी बढ़ जाती है। यह जोड़ों के दर्द का भी एक कारण है। 22 से 60 वर्ष के लोगों को इस अध्ययन में शामिल किया गया था। प्रदूषण बढ़ने की वजह से रिम्योटॉयड ऑथराइटिस मरीजों की संख्या में पिछले एक दशक में दोगुनी हो चुकी है। अध्ययन रिपोर्ट इसी वर्ष अक्तूबर से नवंबर-15 तक प्रकाशित होगी।

प्रो. डॉ. उमा कुमार, प्रमुख एम्स रिम्योटॉयड ऑथराइटिस डिवीजन

स्कूली बच्चों के फेफड़ों पर भी पड़ा असर

नई दिल्ली (ब्यूरो)। देश भर में हवा की गुणवत्ता बहुत खराब है। इससे सबसे ज्यादा प्रभावित कम उम्र के बच्चे हो रहे हैं। दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बंगलूरू में किए गए सर्वे रिपोर्ट के मुताबिक 35 फीसदी स्कूली बच्चों के फेफड़ों पर प्रदूषित हवा का असर पड़ रहा है। हालांकि इस मामले में शामिल किए गए स्कूली बच्चों अथवा अध्ययन रिपोर्ट पर किसी तरह का कोई क्लीनिकल ट्रायल नहीं किया गया है।

हील फाउंडेशन की ओर से कराए गए सर्वे में चार शहरों के 10 से 14 वर्ष के करीब 2000 स्कूली बच्चों को शामिल किया गया। इसमें दिल्ली के चार स्कूलों के कुल 735 बच्चों को शामिल किया गया। सर्वे इसी साल मार्च से अप्रैल के बीच किया गया है। अध्ययन के बाद रिपोर्ट में कहा गया है कि दिल्ली में 21 फीसदी बच्चों के फेफड़ों की क्षमता ज्यादा खराब है जबकि 19 प्रतिशत बच्चों की फेफड़े की क्षमता खराब है। बंगलूरू में 36, कोलकाता में 35 और मुंबई में 27 फीसदी स्कूली बच्चों के फेफड़ों पर असर पड़ रहा है। फाउंडेशन के प्रतिनिधि डॉ. प्रितेष कौल ने कहा कि फेफड़ों के स्वास्थ्य की जांच में यह पता लगता है कि फेफड़ा कितनी हवा को नियंत्रित कर सकता है।

- दिल्ली, मुंबई, कोलकाता और बंगलूरू में हुआ सर्वे
- 10 से 14 वर्ष के 35 फीसदी बच्चे प्रभावित

Amar Ujala(Delhi Edition)
5th May 2015